आदि तिरुवथिरई महोत्सव: राजेंद्र चोल प्रथम की गौरवशाली विरासत का जश्न

चर्चा में क्यों ?

- संस्कृति मंत्रालय ने 23 से 27 जुलाई 2025 तक तमिलनाडु के गंगईकोंडा चोलपुरम में आदि तिरुवथिरई महोत्सव आयोजित करने की पूरी तैयारी की है। यह उत्सव राजेंद्र चोल प्रथम की 1000वीं समुद्री यात्रा और गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर के निर्माण की शुरुआत की याद दिलाता है। महोत्सव का भव्य समापन 27 जुलाई को होगा, जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल होंगे।

समारोह में प्रमुख आयोजन:

- 1. सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ: कलाक्षेत्र फाउंडेशन द्वारा विशेष भरतनाट्यम प्रदर्शन और देवराम थिरुमुराई का गायन।
- 2. पुस्तिका विमोचन: देवराम भजनों पर साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तिका का विमोचन।
- 3. संगीतमहोत्सव: पद्म विभूषण उस्ताद इलैयाराजा द्वारा संगीत प्रस्तुति।

आधिकारिक प्रदर्शनी और विरासत यात्राएँ:

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) शैव धर्म और मंदिर वास्तुकला पर विशेष प्रदर्शनियाँ आयोजित करेगा, और अन्य विरासत यात्राएँ भी आयोजित की जाएंगी।

महोत्सव का उद्देश्य:

- इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य शैव सिद्धांत, मंदिर वास्तुकला, और चोल राजवंश की असाधारण विरासत का जश्न मनाना है, साथ ही तमिल संस्कृति और नयनमारों (तमिल शैव संत कवियों) के योगदान को सम्मानित करना है।

आदि तिरुवथिरई महोत्सव का महत्व:

- इस महोत्सव का आयोजन राजेंद्र चोल के जन्म नक्षत्र, तिरुवथिरई (आर्द्रा), के साथ मेल खाता है, जो इसे इस वर्ष और भी महत्वपूर्ण बनाता है।

राजेंद्र चोल प्रथम की ऐतिहासिक भूमिका:

- राजेंद्र चोल प्रथम (1012–1044 ई.) चोल साम्राज्य के महान सम्राट थे, जिन्होंने दक्षिण भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका शासन काल चोल साम्राज्य के स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है।

1. राजनीतिक और सैन्य विस्तार

- गंगेटिक अभियान (1023–1025 ई.): राजेंद्र चोल ने बंगाल और बिहार के पाल सम्राट महिपाल को हराया और गंगा नदी तक अपनी विजय यात्रा की। इस अभियान की स्मृति में उन्होंने 'गंगैकोंडचोलपुरम' (गंगा पर विजय प्राप्त करने वाला चोल का नगर) की स्थापना की और 'गंगैकोंडाचोलन' (गंगा को जीतने वाला चोल) उपाधि धारण की।
- कलिंग (उड़ीसा) और पांड्य (तमिलनाडु) राज्यों पर विजय: उन्होंने उड़ीसा के सोमवंशी शासक इंद्ररथ और पांड्य सम्राटों को पराजित किया।
- श्रीविजया साम्राज्य पर आक्रमण: उन्होंने मलय द्वीप समूह के श्रीविजया साम्राज्य पर सफल आक्रमण किए, जिससे चोल साम्राज्य की समुद्री शक्ति का विस्तार हुआ।

- **2. नौसैनिक शक्ति और विदेश नीति**
- राजेंद्र चोल ने भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी नीली जल नौसेना का नेतृत्व किया, जिसने श्रीविजया, बर्मा, अंडमान-निकोबार, लक्षद्वीप, मालदीव और पगु द्वीपों पर सफल आक्रमण किए।
- उन्होंने चीन के सांग राजवंश और अरब व्यापारियों के साथ व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध स्थापित किए, जिससे चोल साम्राज्य की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा बढ़ी।
- **3. सांस्कृतिक और धार्मिक योगदान**
- राजेंद्र चोल एक समर्पित शिव भक्त थे, लेकिन उन्होंने बौद्ध धर्म को भी प्रोत्साहित किया और दक्षिण भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में स्तूपों का निर्माण कराया।
- उन्होंने 'गंगैकोंडा चोलपुरम' में 'गंगैकोंडचोलेश्वरम' शिव मंदिर का निर्माण कराया, जिसमें गंगा नदी का जल लाकर डाला गया। ये मंदिर आज एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
- उनके शासनकाल में चोल वास्तुकला और कला का उत्कर्ष हुआ, विशेष रूप से मंदिरों के निर्माण में।
- **4. प्रशासनिक सुधार और स्थानीय शासन**
- राजेंद्र चोल ने स्थानीय स्वशासन की प्रणाली को बढ़ावा दिया, जिससे प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि हुई।
- उनके शासनकाल में भूमि कर, जल आपूर्ति और सार्वजनिक कार्यों के लिए विस्तृत प्रशासनिक संरचनाएं स्थापित की गई।

निष्कर्ष

- उनकी समुद्री यात्राओं ने दक्षिण-पूर्व एशिया में चोल साम्राज्य का प्रभाव बढ़ाया। उन्होंने गंगईकोंडचोलपुरम को अपनी राजधानी बनाई, जहां उनका द्वारा निर्मित मंदिर आज एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

UPSC PYQ :

- **प्रश्न. मुरैना के पास स्थित चौसठ योगिनी मंदिर के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2021)**

1. 1. यह कच्छपघात राजवंश के शासनकाल के दौरान बनाया गया एक गोलाकार मंदिर है।
2. यह भारत में निर्मित एकमात्र गोलाकार मंदिर है।
3. यह क्षेत्र में वैष्णव पंथ को बढ़ावा देने के लिये था।
4. इसके डिज़ाइन ने एक लोकप्रिय धारणा को जन्म दिया है कि भारतीय संसद भवन के पीछे इसकी प्रेरणा थी।

- **उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?**

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 4
D. केवल 2, 3 और 4

- उत्तर: C

- **प्रश्न. भारत ने दक्षिणपूर्वी एशिया के साथ अपने आरंभिक सांस्कृतिक संपर्क तथा व्यापारिक संबंध बंगाल की खाड़ी के पार बना रखे थे। निम्नलिखित में से कौन-सी बंगाल की खाड़ी के इस उत्कृष्ट आरंभिक समुद्री इतिहास की सबसे विश्वसनीय व्याख्या/व्याख्याएं हो सकती है/हैं?**

A. प्राचीन काल तथा मध्य काल में भारत के पास दूसरों की तुलना में अति उत्तम सोत-निर्माण तकनीकी उपलब्ध थी
B. इस उद्देश्य के लिये दक्षिण भारतीय शासकों ने व्यापारियों, ब्राह्मण पुजारियों और बौद्ध भिक्षुओं को सदा संरक्षण दिया
C. बंगाल की खाड़ी में चलनेवाली मानसूनी हवाओं ने समुद्री यात्राओं को सुगम बना दिया था
D. इस संबंध में (a) तथा (b) दोनों विश्वसनीय व्याख्याएँ हैं

उत्तर: (d)

Practice Question

राजेंद्र चोल प्रथम द्वारा निर्मित गंगैकोंडा चोलपुरम का ऐतिहासिक महत्व क्या था?

A. यह चोल साम्राज्य की पहली राजधानी थी।
B. यह गंगा नदी पर विजय प्राप्त करने का प्रतीक था।
C. यह बौद्ध धर्म के प्रचार का केंद्र था।
D. यह पांड्य साम्राज्य की हार का प्रतीक था।

Question (Mains)

1. राजेंद्र चोल प्रथम के शासनकाल में चोल साम्राज्य ने दक्षिण-पूर्व एशिया तक अपने प्रभाव का विस्तार किया। उनके समुद्री अभियान और अन्य क्षेत्रों में की गई विजय के बारे में विस्तार से बताइए। साथ ही, उनके प्रशासनिक सुधारों और सांस्कृतिक योगदान का भी विश्लेषण करें।